(1049) भक्तमाल टीका - रसबोधिनी ब्रजभाषा

लिपि-1863

पत्र-25

नरष्यषंडनृधरस्कमेरटीलालाहाकीपधनिवगट॥ अंगनेपर
मानंदंदासजोगीजगजागे॥ षरतरषेमंतदारध्यानकेसोहरिज
नअनुरागे॥ अस्कुटसोलाशाष्टलोहकरवंसतजागर॥ हरिदा
संकपिंथेमसबैनवधसकेआगर॥ अच्युतकुलसेवैसदादा
शातनदशाधाअघट॥ नरष्यपंननृधरस्कमेरटीलालाहाकीप
घतपगट॥ ९६॥ मथुपुरीमहोछोमंगलरूपकाकडकोसोको
रंक कौरे॥ चारिवरनआश्रमराजाअन्नपावै॥ नकनिकोवडुमा
निविमुषकोर्तनहीजावै॥ वीरीचंदनवसनकृस्नकीरतनब
रषैं॥ घनृकेनृषनदेइमहामनअतिसयहरषैं॥ विठलसुत
विमल्यौफिरैदासचरनरजसिरधरै॥ मथुपुरीमहोछोमंग
लरूपकाकडकोसोकोकरै॥ ९७॥ नकनिसोंकलिजुगन

10" NS

नरू·

लैंनिवाहीनीवाषेतसी॥ऋांवहिदामस्त्रनेकनविश्रादरकरिली॥
जै॥वरनधोइदंमवतसदनमैंमेराहीजै॥गेरगोरहरिकह्याहदेखे
तिहरिजनमावै॥मफरबचनमुकुलाइविविधिनांतितिनेंलफावें
सावधांनसेवाकरैनिईषनरतिचेतसी॥नक्लनिसोंकलिजुगन
लैंनिवाहीनीवाषेतसी॥धण॥बसनबडेकुंतीवधूत्योंतोंवरन
गवानकें॥यदस्त्रचिर्यनयोएकथांमघृतमेंदावरषे॥रजतरु
कनकीरेलसछिमबहीमनहरषे॥नोजनरासिविलासकृस्न
कीरतनकीनौं॥नक्लनिकोबहुमानदानसबहीकोंदीनौं॥की
रतकीनीनीमसकतनवकाब्रबीसकनिनूपमनोर्यस्त्रांनिकें॥व
सनबडेकुंतीवधूत्योंतोंवरनगवानकें॥धण॥टीका॥वीतत
वरसमासस्त्राविमधुपुरीनेमप्रेममेंमहाछोरासिहेमहीलुटा

कृस्मः
१७३
७३

ई ये ॥ संतन जिवाइ नाना पटप हिराय पाछें द्विजन बुलाइ कछु
पूजपैं न नाइयै ॥ आयौ कोउ काल धन माल जा विहाल न यौ चा-
है पन पास्यौ आप्त आ ऐस्रु ल पकराइयें ॥ रहे विप्र द्विज पिसुनि नयौ सुष
नृपवदी आयौ यें समाज करो ष्यारी मन आइयें ॥ ७० ॥ अतिस
नमान कियौ ल्याए जोई सो पैं दियौ लियौ गां विविधि नवीन ॥
ती सुनाइयें ॥ संत नि जिवावौ नावैं गांम लैं करावैं नावै जैवो सुष
पावौ कीजे वात मन नाइये ॥ सीधो ल्याय को वध स्यो ओ कह्यो सा-
थे लीनस्यो द्विजन बुलाइ तकयौं ऊ न घटाइये ॥ जितनों निका-
सैं ताते सौ गुनौं वढत आर एक एक वेर वीसगुनौ रे पवाइयें
७२ ॥ मूल ॥ जसवंत नक्र जैमाल कीरू डांगवीराव वड ॥ नक्र
निसांअति नाव निरंतर अंतर नांही ॥ कर जोरे इकपाइ मुदित

भक्त.

मनकीआज्ञामांही ॥ श्रीवृंदावनकोवासकुंजक्रीडारसचिताँवे ॥ राधा
वल्लभलालनित्यप्रतिताहिलडावैं ॥ परमधर्मनवधाप्रधानसं
तनसोंचनिधिप्रेमजड ॥ जसवंतभक्तजैमालकीरूडतांशषीरगढ
ड ॥ ५० ॥ हरिदासभक्तनिहितधन्यजननीएकैजन्यौ ॥ अमितम
हागुनगोप्यसारवितसोईजानें ॥ देषतकोतुलाधारदृडविश्वासपधु
तनमानें ॥ देइदमामोपेजविदितवृंदावनपायो ॥ राधावल्लभनभज
नअलाटचुतापदिषायो ॥ परमधरमसाधनसुदृडकलिजुगकामधे
नमैंगन्यो ॥ हरीदासभक्तनिहितधन्यजननीएकैजन्यो ॥ ५१ ॥

॥ टीका ॥ हरीदासबनैकसोकासीहिगवासजाकोयदपनतन
सागोंव्रजनूमिहो ॥ नयोजवरनारीछीनल्योडिगएवैदतीनबो
ल्योयोंप्रवीनवृंदावनरसकूमिहो ॥ बेटीचारिसंतनिकोंदई

कृष्ण:
७४
७४

अंगीकार करै राधे गोली मांक मोकों ध्यान ब्रजजन्म सिद्धी ॥ चले।
सावधान राधावल्लभ नंको गांन करै रकरै च्छ्र विर्यलोगपरी गांव
धू सिद्धी ॥ ७४ ॥ आवत ही मग मां फिल्लू टिग यो तन पन सां चो कि
यो स्पाम वन प्रगट दिषा यो है ॥ आयदर्शन कीयो इष्ट गुरु थे म
न रि नैमपस्यो पूरी जाइ चीर घाट न्हायो है ॥ पाछै आएलोग सोग
करत नरत नैंन बैंन सब कही कही ता दिन ही आयो है ॥ न क्र
को भनाव यामैं नाव औरं आंनो जिनि विन हरि कृपा यद केसैं
जात पायो है ॥ ७३ ॥ मूल ॥ न क्रि नार जूडे जुगल धर्म्म धुरंधर
जग विदित ॥ वां बोली गोपाल गुन नि गंनी रघुनाद ॥ रहिन
दिन्ना विष्णुदास संगांव कासी रन जनननद ॥ न क्र निसो इ हि नाई
न जे गुरु गोविंद जैसें ॥ तिलक दाम आधा न सु बर संत निष्ठा।

नरू॰ नितसैं॥ अच्युतकुलपनएकरस निबह्योजैसौंश्रीमुषगादित॥न
ग क्किनारजूंडेजुंलधर्मधुरंधरजगविदित॥५२॥टीका॥ रहैगुरु
नाईदोउनाईसाधसेवाहियेंअैसेरुफघराईनईरीतिलैचला
इयै॥ जांहिजामहेछेमेंबुलाएकुलसाएआंगगाडीसामासो संग
नेकारीटेमिलाइयै॥ याकौतातपर्यसंतघटतीनसहीजातबा
तवेनजांनैंसुषमांनेमननाइयै॥ बडेगुरुसिद्धजगमहिमाप्र
सिद्धबोलेविनेंकरजोरसोईकहिकेंसुनाइयै॥ ७४॥ चाहतम
होबोकीयोकुलसतहियोनितलियोसुनबोलेकरोवेगदेति
यारियै॥ चक्कंदिग्निफास्यौनीरकस्यौनपौंतोअैसैंधीरसाबैबज क्तमा:
नीरसंतगेरनिसबारियै॥ आएहरिप्यारेच्यारोंकूंटतेंनिहारे १७५
नैंनजाइपगधारेसीसविनेंलेंउचारियै॥ भोजनकराइदिन ७५

पांचलगिछाइरहेपटपटहिरायस्कषदीयेअतिनारियै॥ ७५॥ अ
ग्यागुरुदईनोरअवोफिरिआसपासमहंस्कषरासनामदेवजू
निहारियै॥ उज्जलबसनतनएकलेखसन्नमनचलेजातवेगसी
सपाइनपैंधारियैं॥ वैईदेंवताइश्रीकबीरअतिधीरसाधचले
होकुनाईखदछिनाविचारियै॥ षष्टमनिॅषिनार्महरषिलपटप २
गल। गि[illegible]रहेछोडतनबोलेस्कनेंधारियै॥ ७६॥ साधअपरा
धजहांहोततहांआवतनहोइसनमानसबसंततोहीआइये
टेषीछोतिरीतिहमनिपटप्रसन्ननएनरलाइजावोश्रीकबीर लाए
पाइये॥ आगेंजोनिहारेनकराजहगधारेंचलीबोलेहसिआप
कोउमिल्योस्कषदाइये॥ कस्योहांजूमानिदईनईकपाधूर
नयोंसेवाकोप्रतापकहेंकहांलगिगाइये॥ ७७॥ मूल॥ की

नरू ल्द्रूपाकीरतिविसदपरमपारषदशिष्यप्रगट॥आसकरनरि
षिराजरूपभगवाननक्रिगुरु॥चत्रुरदासजगअभैछापछीत
रजूचत्रुरवर॥माधोग्वालतुराइमलप्रेमममनसाक्रमवाचा॥रसि
केराइमलगौरदेवादामोदरहरिरंगराचा॥सबैरूमंगलदासदृ
ढधर्मधरंधरनजननरट॥कील्हरूपाकीरतिविंदपरमपारष स
दशिष्यप्रगट॥५३॥रसरासउपासिकनरूराजनाथ्यनटनिर्म
लवैंन॥आगमनिगमपुरानसारशास्त्रजूविचाऱ्यौ॥ज्यौंपारौदे पादे
पुटहिसवनेकौसारउधाऱ्यौ॥श्रीरूपसनातनजीवनटनारायन
नाथ्यौ॥सोसर्वसउरसांविजतनकरिनीकैंराख्यौ॥फनिवंसगो कल्पः
२ पालसुवंशगाअनुगाकोअंबेन॥रसरासउपासिकनरूराजना १५६
थ्यनटनिर्मलवैंन॥५४॥कविनकालकलिजुगमेंकरमेंतीनि ७६

दकलंकरही॥ नरवरपतिरतित्यागिकम्मपदसौंरतिजोरी॥ सबै
जगतकीफांसितरकतिनुकाज्यौंतोरी॥ निर्मलकुलकांथडाधं
न्यपरसाजिहिजाई॥ विदितवृंदावनवाससंतमुषकरतवडाई
संसारस्वादसुषबांतिकरिफेरिनहिनिनतनचहीं॥ कविन
कालकलिजुगमैंकरमैंतीनिकलंकरही॥ ५५॥ टीका॥ सेषाव
तनृपकेपुरोहितकीबेटीजानोंबासहोषंडेलाकरमैंतीजोबषां
नियें॥ बस्योउरस्यामअभिरामकोटकामहूतेंलैंधामका
मसेवामानसीपीछानियैं॥ बीतजातजामतनबामअनुकूलनये
फलिफूलिअंगगतिमतिछबिसांनियें॥ आयोपतिगोंनोलेंननां
योपितिमातहियेंलियैंचितचावपटआनरनआनियें॥ ७७॥ प
स्योसोचनारीकेंहाकीजियैविचारीहाइचामसोंसंवारीदेहति

नं॰कः

केनकामकी॥ तातेंदेवौस्यामिमनमोंवेजिनजातिअरेमिटैनरद
गएकसांचीप्रीतिस्यामकी॥ लाजकोनकाजजोपैंचाहेंबृजराजसु उ
तवडोईअकाजजोपैंकरैस्कधधामकी॥ जानीनोरगोंनोंदो
तसांनीअनुरागअंगसंगएकवहीचलीनीजीमतिवामकी॥ ७
९॥ आधीनिशिनिकसीयोंबसीहीयेमूरतिसोपूरतुसनेदतनसु
धिविसराईहै नोरनएसोरपस्यौपस्योपितुमातसोचकस्योले
जतनवेरगेरहूंरिम्याइहै॥ चारोंओरदौरेनरआएढिगठरिजा
निकंटकेकरंकेमध्यदेहजाडराईहै॥ जगदगंधकोकछैसी
वुरीलागीजामेंबडोदुर्गंधसोसुगंधसीमानाईहै॥ ८०॥ बीतेदि कृस्नः
नतीनवाकरंकहीमैंसकनहींबंककछीतिरीतियदकैसैंकरि १७७
गाइयें॥ आयौकोऊसंगताहीसंगगंगतीरआईतहांसोअन्हा ७७

ई देन्हृ षनवनक्ष्याइये॥ दृष्टतपरसरामपितामक्षवुरीन्हश्रापेपंतेले
वतायेजायमा।धुर।मिलाइये॥ सघनविपिनवुह्लकुंडपरवट।ए
कचद्विकरिदेषीन्हमन्त्रसुवानिजाइये॥७१॥ तत्तरिकैंन्हआइरोइ
पाइलपटाइगयोकटीमेरानाकजगमुषनदिषाइये॥ चलौ येह
वैसकरैलोकनुपहासमिटैसासुघरजावोमतेसेवाचितला
इये कौंकसिंघव्याघ्रन्हजंवपुकौंविनासकरैत्रासमेरहो
तफिरिमृतकजिवाइये॥ वोलीकहीसांचविननक्ननजेसो
जांनोजोपैजियोचाहोकरौडीति जसगाइयै॥७२॥ कहीनुमक
टीनाककटैजोपैंहोइकहूंनाकएकनक्कनाकलोकमैंनपाइ
यै॥ वरसपचासलगविषैहीमेवासकीयोतउनउदासनये
चवेकौंचवाइये॥ देषिसवनोगमैंनरदेषेएकदेषेस्यामताते

न॰कृ॰ तजिकामतननसेवामैंलगाइदयैं॥रातिदिनंज्यौंआतन्होतन्येसेंतनम
जातननयोदयोलेसरूपअनुगायौहियेंआइयें॥७३॥आएनि
सघरहरिसेवापधराइवाइमनकोंलगाइवहीटहलसुहाइदें
कहूंजातआवतनभावतमिलापकहूंआपनृपपूछैद्विजक
हांसुधिआइहैं॥बोल्योकोउजनधामस्यामसंगपागेसुनिच
त्तिअनुरागेबेगयबरमंगाइहैं॥कहोउमजाइईआइहांईच
सीसकरोंकहीनृपआवोदियेंचाहउपजाइदयें॥७४॥देषीनृप
प्रीतिरीतिपूछीसबबातकहीनैंननअश्रुपातचढरंगेस्यामरंग
में॥बरजतआयेनृपजाइकेंलिवायल्यांऊंपाऊंजोपेंनागमेर कृ॰मा॰
वडीचाहअंगमें॥कालंदीकीतीरगाडीनीरहगानृपलषीरूप १७८
कछुऔरकहाकहेंवेउमंगमें॥कियोमनेंल्यावबेरऐपैंअ ७६

धारदच्चाधातरु ॥ मदनबसत निर्वेदसारनुकजगतञ्चसंगी ॥ सदा
वारगदा रनेमहरिदासधुसंगी ॥ दयादृष्टिवसिञ्चागरैंकयाने
गपांवनकस्यो ॥ प्रगटञ्चमितगुनप्रेम निधिधन्यविप्रजिदिनामध
स्यो ॥ ६२ ॥ टीका प्रेमनिधिनामककैसेवाञ्च निरामस्यामञ्चागरोस
हरनिसिमेसजलल्याइमे ॥ वरषाऋतुजिततितञ्चतिकीचनई
नईचित्तचिंताकैसेंञ्चपरसञ्चाइयें ॥ जोपैंञ्चंधकारहीमेंचलों
तोविगारहोत चलेयोंविचारिनीचछुवेनसकदाइये ॥ निकसतव
रजबदेष्योसुकुंवारएकहाथमेंमसालयाकेंपाछेंचलेजाइयें ॥
जानीयहबातपकुंचायेकछुंजातयहञ्चबहीबिलातनलेचैंन
कोकघरीहैं ॥ जमुनालोंञ्चायोञ्चचिर्यसोलगायोमनतनञ्चक्को
वायोमतिवारीहैपवरीहैं ॥ घटनरिधस्योसीसदीपटवहञ्चाइग

आइगयो

नक्र. थोघर नहीं देषी कहूं कहीं है ॥ लागी चटपटी अटपटी न समझ परे न
टनटी नई नई नैंन नीर झरी है ॥८८॥ कथ्या ऐसी कहै जामैं गद है मन
भावन नैं रंक रैं रूप आह इष्टिउ इष्ट जन डूष पायो है ॥ जाय कैं सिषायो पात
मा हरि रहा हरनयो कही तिया न लीको समृद्ध परछायो है ॥ आए चो
पदार कहै चलौ इही बार वे रिझा री वनु आगे धस्यो चाहै सोर लायो
है ॥ चले तव संग गए पूछे नृप रंग कहा तिय नि छ संग करौ कहि कैं
सुनायो है ॥८९॥ कान्हन गवा नहीं की [illegible] बात सो बषान कहूं आनि
बैठै नारी नर लागी कथ्या प्यारी है ॥ काहू कौं बिडारे फिर कारे नैंकु टारें
विषे दृष्टि कौं निहारें ता कौं लागे दोष नारी है ॥ कहैं तु मन लीनै रीग । कृष्ण:
ली ही के लोग मो सों आनि कैं जताइ वह रीति कछु न्यारी है ॥ बोल्यो । १८२
मा हि राषो सब करें निरधार नीकें चले चोपदार ले कै रीके पचुधो २०

रीहैं ॥५१॥ सोयोपात्तसादनि सिद्धा निकैं स्वपन दियो कियो वाकौ
इष्टनै षकहीप्यास लागी हैं ॥ पिबो जल कहां आवषांनैं लैवषानैं
तब अनिहीरिसानें कोपिवावे कोगरागी हैं ॥ फेरमारी ल्यातव अरे सुनी
न्हीबात मेरी आपपफरमावौ जोई प्यावै वडनागी हैं ॥ सोतोतैंले
कैंटकस्यौ सुनि अरवस्यो नस्यो नस्यो दियें न्नावमति सोवतनें जागी
हैं ॥५२॥ देरैन रताद्वीसमैं वेगि देलि वाइ ल्याए देषि लपदाइनै पाद
पहगनीजैहैं ॥ साहिब तिसाए जाइ अबहीपी वावौनी स्वौ रपैंन
पीवैं एक तुमहीपें रीफे हैं ॥ लै वोदेश्रगां वसदापां वहीसौं लाग्यो
रहैंगाहैं नहीं नैं कुधनपाइ बुझीजे हैं ॥ संगदेमसाल ताहीका
लमैं पवाएयौं कपाटजाल सुलैलान प्यावौ जल धीजै हैं ॥५३॥
मूल ॥ इ बलोजा हिइनीयां कहै सो नकनजन मोटोम हंत ॥ सदा

भ॰म॰ चारगुरुशिष्यसागिविधिप्रगटदिषाई ॥ बाहरभीतरविसद ल
गीनहिकलिजुगकाई ॥ राघोरुचिरस्वनावश्वसदन्श्रालापन
भावे ॥ कथाकीरतननेममिलेसंतनगुनगावे ॥ ताईतौलिपूरा
निकषज्योंघनश्रहरनिहीरासहंत ॥ ह ॥ बलोजादिहुनीयांक
हैंमोनकृनजनमोटोमदंत ॥ ६३ ॥ दासनिकेदासंनकोंचोकस
१ चोकीएमंमी ॥ हरिनांयननृपतिपदमबेरहैंविराजे ॥ गांवकुंस
गावाटछटलनषेवेनलछाजे ॥ भेलेंतुलसीदासंनटप्यावदेव ८
कल्यानौं ॥ बोहिथ्यबिगेरामदासंसुहेलेंपरमसुजानौं ॥ श्रो
लीपरमानंदकेधुजासबलधर्मकीगडी ॥ दासनकेदासंत्वकों कृष्णः
चोकसचोकीएमंडी ॥ ६४ ॥ श्रबलासरीरसाधनसबलएवाइ १८२
हरिनकिवल ॥ दमांप्रगटसबडनीरामबाईबीरांहीरांमनि ॥ ६२

लालीनीरांलषांजुगलपारबतीजगतधनि॥ षीचनकेश्रीधनांगोम
मतीनकरूपासनि॥ वांदरांनीविदितगंगायमुनारैदासनि॥ जे
वांहरषांजोसिनिकुंवरिराइकीरतिश्रमल॥ श्रबलाचारीरमा
धनसबकलएवांईहरिनक्तिबल॥ ६५॥ कान्हडदाससंतनिकृपा
हरिहदैलाहोलह्यो॥ श्रीगुरुसरनैआयनक्तिमारगसतजा
न्यो॥ संसारीधर्मछांडिफूरवश्रमसाचपिछान्यो॥ ज्योंसाषाद्रुम
चंदजगततेंइहविधन्यारो॥ सबनूतसमदृष्टिगुननिगंनीर
श्रतिनारौ॥ नक्तनलाईबदनितकैबचनकबहूनाहिन
कह्यो॥ कान्हडदाससंतनिकृपाहरिहदैलाहोलह्यो॥ ६६॥
लटोलटेरानिविधिपरमधरमश्रतिपीननन॥ कदहनीर
हनीएककएकश्रनुपटश्रनुरागी॥ जसवितानजगतन्योंसंत॥ मै

भक्त: संमत बड भागी ॥ तिसोई स्तुत सष्तत नृतफल जै सोई परसा ॥ हरिहरि
दास नि हहलक कवित रचना तु निस रसा ॥ सुरसुरानंद संप्रदाइ
हुढ के सब अधिकनु दार मन ॥ लयौ लटेरा आनि विधि परम ध
मे अति पीन तन ॥ ६९ ॥ केवलराम कलिजुग के पतित जीव पा
वन कियौ ॥ भक्त भागवत विमुष जगत गुर नाम न जानें ॥ ऐसे
लोग अनेक ऐंचि सन मारग आनें ॥ निरमत्सर निहकाम अ
जातें सहज हासी ॥ तत्व दरसी तमहरन सील करुनाकी रासी ॥
तिलक दाम नवधा रतन कृष्ण कृपा कर हिढ दिया ॥ केवल
राम कलिजुग के पतित जीव पावन किया ॥ ६० ॥ टीका ॥ घर
घर जाय कहै यहै दान दीजे मोकौं कृष्णसेवा कीजे नाम ली १०२
जै चित लाइकें ॥ देषेंगे पधारी रहा वीसक कंठ अनाचारी दए ६३

प्रनुसेवनकोंरीतिदीसिषाइकें॥करुनानिधानकोउसुनेंनही
कानकउंवेलकैलगायोमैंटेलोटेदयाल्त्राइकें॥उपदेश्योउगद
तनमनकीसचाईश्रहोनएतदाकारकदेहोंकेसैंसमझाइकें
९४॥मूल॥श्रीमोहनमिश्रितपदकमलश्रासकरनजसविस्तस्यो॥धर्मसीलगुनसींवमहाभागवतराजरिषि॥पृथ्वीराजकुलदीपभीवसुतविदितकील्हसिषि॥सदाचारश्रुतिचतुरविमलवानीरचनापद॥सूरधीरउदारविनेंभलपननकानिदृढ
सीतापतिराधासुवरभजननेमकूरमधस्यो॥श्रीमोहनमिश्रितपदकमलश्रासकरनजसविस्तस्यो॥९४॥टीका॥नरवरपुरताकोराजानरवरजानोंमोहनजूधरिहियेंसेवानीकेंकरीहैं॥घरिदश्रमंदिरमैंरहैंरहैंचौकीचोबद्वारपावतनजा

नैक.

नकोकृष्णैसी वृत्ति मतिहरीहैं॥ पर्योकोऊकामञ्याइञ्यबंदीलि
वाइल्यावैाकहैहैएथिपतिलोगकानमैंनधरीहैं॥ञ्याईफोजन
रीस्कधिरीजियेहमारासुनिवैकुवाततटारीपरात्र्यतिपरबरी
है॥५५॥कहिकैपवाइकाहेकोजियेलराईस्कनिरूचित्तप
जाईचलिटथीपतिञ्यायोहै॥पर्योसोचनारीतबबातयोंवीचा
रीकहीञ्यापएकजावोगयोञ्यचियेपायोहै॥सेवाकरिसिद्धिसाम
र्थ्यागकेकेंनृपिपरेटेषीवडीवेरपावषडगलगायोहै॥कटिगईए
मीत्र्यपैंटेठहूननैाहकरीकरीनितनेमरीतितिधीरेदिषायोहै॥
५६॥उगिविगडारितबपाछैसोनिहारिकियोमुजराविचारिपा कृष्ण:
नसाढ्यतिरीफेहैं॥हितकीसचाईहियेंनैकुनकचाईहोतच १८४
सु नि स्वावलाईनावसुनिनीजेहैं॥वीतेदिनकोननृपनकसोसमायो ६८

श्चीपतितुषपायेसुनीनोगहरीछीजेहैं॥कैंथैंविडसेवातिनैंगां
वलिषिन्यारेदिएवाकेप्रानप्यारेलाफकरीकदिधीजेहैं॥७७॥मू
ल॥निहकिंचननक्तनिनजेहरिव्रतीतहरिवंश्नके॥कथाकीरत
नश्रीतिसंतसेवाअनुरागी॥षरियापुरपारीतितताद्विजेपोंसर्वसुस
गी॥संतोषीसुविसालअसदआलापननावे॥कालहथ्यानदिजा
इनिरंतरगोविंदगावे॥शिष्यसपूतश्रीरंगकोउदितपारषदअंस
कै॥निहकिंचननक्तिनिनजेहरिव्रतीतिहरिवंसके॥७०॥ह
रिनक्तनलाईगुनगांनीरवांटेपरीकल्यांनकें॥नवकिसोरह
ढव्रतअनन्यमारगइकधरा॥मधुरवचनमनहरनसुषद
जानतसंसारा॥परउपकारविचारसदाकरुनाकीरासी॥मन
वचसर्बसरूपनक्तपदरैंनउपासी॥धर्मदासस्तुतश्रीलसुविम

भक्त॰

नमान्यो कृष्णसुजान कौ॥ हरिभक्तन लाई गुनगंभीर बांटै परी कल्या
नकौ॥ ७१॥ बीठलदास हरिभक्त के दुहूं हाथ लाडू लिया॥ आदि
अंत निर्वाह भक्त पदरज ब्रतधारी॥ रह्यो जगत सों ऐंडि तुछ जा
नत संसारी॥ प्रभुता पति की पधति प्रगट कुलदीप प्रकासी॥ मह
तसनामैं मान जगत जानैं रैदासी॥ पदपढत नई परलोक गति
गुरु गोविंद जुग फल दिया॥ बीठलदास हरिभक्ति के दुहूं हाथ
लाडू लिया॥ ७२॥ भगवंत रचे भारी भक्त भक्तनि के सनमान
कौं॥ कान्हर श्रीरंग सुमति सदानंद सर्वस त्यागी॥ स्यामदास
लघु लंब अनन्य लाषै अनुरागी॥ भाऊ मुदित कल्यान परस
बंसी नारायन॥ चेता ग्वाल गुपाल संकर लीला पारायन॥ संत
सेय कारज किया तोषत स्याम सुजान कौं॥ भगवंत रचे भारी भग

तनक्रनिकेसनमानिकों ॥ ७३ ॥ तिलकदामपरकामकौंहरिदा-
सहरिनिर्मयो ॥ सरनागतिकौंसिवरिदानरधीचटेकवलि ॥ पर
मधर्मप्रल्हादसीसजगदेवदैनकलि ॥ वीकावततवानैंनक्रिपन
धर्मधुरंधर ॥ हूंवरकुलदीपकसंतसेवानितअनुसर ॥ पार्थपीठ
अचिर्मकोंनसकलजगतमैंजसलियो ॥ तिलकदामपरकाम-
कौंहरिदासहरिनिर्मयो ॥ ७४ ॥ टीका ॥ प्रल्हादअवारिनकूगाए
गुननागवतसौसबइककवैरअवाइदेषेहरीदासमैं ॥ रीझिजग
देवसोंयोंकहिकैंवषानिकियोजानततनकोंकसुनोंकयोलेअ
कावामैं ॥ रहैएकनटीआकरूपगुनजटीगावैलावैवटपटीमोह
पावैमनडहांसमैं ॥ राजारिझवारककैदेवेकोंविचारपैंनपावैसा
रकोटैसीसराष्योतेरपासमैं ॥ ७५ ॥ दियोकरदाहनौंमैंयासोंन-

नक्ष:

हीजावैंकाहूसुनिएकराजानेदनावसौंबुलाईहै॥निर्द्धकरिग

ईरीफलवेकोकहीत्र्याइदेहु कंग्रोवांवैंहाथरिसनरिकैंसकनाई

है॥इतौत्र्यपमानपानदछिनलेदियोत्र्यहोनृपजगदेवजूकौंत्रे

सौकहापाईहै॥तासौंदसगुनीलीजेमोकौंसोदिषाईदीजेद्दइन

हीजाइकाहूमोहियेंसुहाइहै॥८८॥कितौसमझावेल्यावाक

हैयहैजकलागीगाईबरूनागीपासवस्त्रमेरीदीजियै॥काटिदी

यौसीसतननरहैईग्रामक्रिलषेल्याईबकसीसयारदोंकिदेषि

लीजियै॥षोलिकैंदिषायौनृपमूरछागिरायोतनधनकीनवा

तत्र्यबयाकौकहाकीजियै॥मैंजूहीनौंहाथजानित्र्यानिग्रीव

जोरिदईलईवहीरीकिपदतानसुनजीजियै॥६००॥सुनीज १०६ ९६

गदेवरीतिषीतिनृपराजसूतासौंबषानिकहीवाहीकौलेरी

पिता

जियै॥ तबतो कुलाएसमझाए बजनांनि षोलि बचनसुनाए श्रे
जूबेटी मेरी लीजियै॥ नहीं सतबार जबकहीफेरो मारि चलेमारि
बेकों बोली वहमारे मतिनी जियै॥ हष्टसोंनदेषै। कहीलयावोक
टिमूं फिलाए चाहेसीस स्त्रांषिनकोंगयो फि रि रीजियै॥ २॥ निष्ठा
रिकवारीतिकीनी विस्तारयहैसुनोंसाधुसेवाह रिदासजूनें
करीहै॥ परदानसंतसोंहैदेतहै श्रनंतसुष रहेप्रोसषुजानिनि
कसुताचित्तधरीहैं॥ दोके मिलिसोवें रितुग्रीषम कीछातपर।
गातपरगात सोंएसुधिनहीपरीहै॥ दांतुनि केकरवेकों चढेनि
समेसत्रापचाहर ऊढाइनी चेंश्रापध्यांनहरीहै॥ ३॥ जागिपरे
दोऊश्रवरेदेषिचाहरिकोंदेषिपदवांनीसुनापिताहीकीजा
नीहैं॥ संतहगनएचलेवेवेसगपगनहगाएलैएकांतिमैंयोंबि

मुरलीवाजदेढर केसंतांदरबार इहीमुरलीवाजन्ही इहांवाजतदरबार

नक्स. नतीबषानीहैं ॥ नैंकुसावधानकै कैंकीजियेनिसंककाजउष्ट
राजछिडपाइकैंहैंकडुवाइनीहै ॥ तुमकोंजुनावधरैंजरैंसुनि
हियेमेंरोफरैंनिंदा आपनीनहोतक्षपदानीहैं ॥ ३ ॥ इतनीज
तावनीमेंनक्तिकौंकलंकलागैत्रैपेसंकवहीसाफघटतीनना
इये ॥ नईलाजनारीविषेवासधोइमारीनीकेंजीकेंउषराखिभा
हैकहूंगविजाइये ॥ निपटमगानकियेनानाविधिसुषदिएपैंन देव
जोनमीलिलालनिलजाइयें ॥ गोविंदअनुजजाकेंबांसुरीको दा
साचौपनमनमैंनआयेनपइहिविधिगाइये ॥ ४ ॥ मूल ॥ नंदा
कंवरकृष्णदासकौंनिजपगतेंनूपरदायो ॥ तानमानसुरता
लसुलपसुंदरसुविसोहैं ॥ सुधाअंगनंगगानउपमांकोंको १८७
है ॥ रत्नाकरसंगीतरागमालारंगरासी ॥ रिफएराधालालन ९७

गोविंदागाटावनी कुकमका योपतमाद कमुरलीकोटेरदे कैंच्वजबुकवादे

कृपदेरैंनुनपासी॥ स्वर्णाकारषड्गूरुवननकनजनपनहट॥
लियो॥ नंदकुंवरकृष्णदासकोंनिजपषवैतेंनूपरदियो॥ ५॥
॥टीका॥ कृष्णदासएकनाराधाकृष्णसुषसारलियोसेवाक
रिपाछैंनृत्यगानविस्तारियै॥ कैकरिमगनकाहूदिनतन
सुधिभूली॥ एकपगनूपरसोगिर्योनसंनारियै॥ लालव्रातिरं
गनेरजानीगतनंगनईपाइनिजषोलिकैबांधोसुषनारि
ये॥ फेरिसकधिक्कगइदेषिधारालेबढाईनेंनूकीरतियोंछाईजा
गनकलागीप्यारियैं॥ ५॥ मूल॥ परमधर्मप्रतिपोषकोंसंन्या
सीएमुकटमनि॥ चितसुषटीकाकारनक्किसवोपरराषी॥
दामोदरतीर्थरामअर्चेनविधिनाषी॥ चंद्रोदयहरिनकनरसिं
घारन्यकीनी॥ माधोमधुसूदनंमरस्वतीपरमहंसकीरतिली

नक्त॰ नी॥परबोधानंदरामजनंइजगादानंदकलिजुगधनि॥परमधर्मेउ
तिपोषकोंसन्यासीएमुकटमनि॥७६॥टीकाप्रबोधानंदसरस्व
तीगुसांइजूकी॥श्रीप्रबोधानंदबडेरसिकआनंदकंदश्री
चैतन्यचंदजूकेपारषदप्यारेहैं॥राधाकृस्नकुंजकेलिनिप
टनवेलकहीफेलेरसरूपदोकुकिएहगतारेहैं॥वृंदावनवा
सकोहुलासलैप्रकाग्योकियोदियोस्वपसिंधेकर्म्मधर्म्म
सबटारेहैं॥ताहीसुनिसुनिकोटिकोटिजनरंगपायोविपि
नसुहायोवसेतनमनवारेहैं॥६॥मूल॥अष्टांगजोगतनत्या
गियोद्वारकादासजानेंइनी॥सरिताकूकसगांवसलिलमैं
ध्यानधस्योमन॥रामचरनअनुरागसुदृढजाकेंसाचोपन॥ १८८
सुतकलित्रधनधामताहिसोंसदाउदासी॥कठिनमोहकोफं ९९

भक्त:

दिनयह विचार दास जिहि विधि रूप पावैं ॥ तिलक दाम सौं प्रीति
हृदै अति हरिजन भावैं ॥ परमारथ सों काज हियें स्वारथ न ही जानैं ॥ द
या धाम हंस मराल सदा लीला गुन गावैं ॥ आरति हरि गुन सील सम प्री
ति रीति प्रतिपाल की ॥ भक्तनि हित तन गवंत रचौ देही माधौ ग्वाल
की ॥ ६० ॥ श्री अग्र गुरु प्रताप तें पूरी परी प्रयाग की ॥ मानस वा
चक काय राम चरन नि चित दीनौं ॥ भक्तनि सौं अति प्रेम भाव
ना करि सिर लीनौं ॥ राम मध्व निर्यान देह दुति दसा दिषाई ॥ अ
ग्यो बल नियो अंक महो छै पूरी पाई ॥ क्यारे कलस ओली ध्वजा विदुष त
स्लाघा नाग की ॥ श्री अग्र गुरु प्रताप तें पूरी परी प्रयाग की ॥ ६१ ॥ रुक्मः
प्रगट अमित गुन प्रेम निधि धन्य विप्र जिहि नाम धस्यौ ॥ सुंदर सी १००
ल स्वभाव मधुर वानी मंगल कर ॥ भक्तनि कौं सुष दैन फल्यौ नव ८०

मूल॥ सोतीम्लाघसंतनिसनाउतियदिवाकरिजानियौं॥ परमनक्ष
ध्रतापधर्मधुजनेजाधारी॥ सीतापतिकौसुजसबदनसोऽनितउच्चति
नारी॥ जानकीजीवनचरनसरनथ्यातीथिंपाई॥ नरहरिगुरु। २
प्रसादपूतपोतेचलिआई॥ रामउपासिकछापदृढ़औरनकछु
उरआनियौं॥ सोतीम्लाघसंतनिसनाउतियदिवाकरजानियौं
५०॥ जीवतजसपुनिपरमपदलालदासदोनोंलही॥ हृदैहरि
गुनषानसदासंतनसंगअनुरागी॥ पद्मपत्रज्यौंरह्यौलोगनकी
लहरनलागी॥ विष्णुरातसमरीतिबघेरेसौंतनसाज्यौ॥ नक्र
वरा। तीव्रदमधमडलदज्यौंराज्यौ॥ परीनक्रहरिषांतुरेगुरुध्र
तापगादीगही॥ जीवतजसपुनिपरमपदलालदासदोनोंल
ही॥ ५१॥ नक्रनिहितनगवंतदर्वीदेद्वीमाधोग्वालकी॥ निमि

दत्तरकिनोरीकुलफासी॥कील्हकृपाबलनजनकौगपानषडग
मायाहनी॥अष्टांगयोगतनत्यागियोद्वारिकादासजानैंजुनी॥१
७॥पूरनप्रगटमहिमाअनंतकरिहैंकौनबषांन॥उदैअस्तपरब
तगाहिरिमधिमरितानारी॥योगजुगतिविश्वासतूहांदृढआसन
धारी॥आधुसिंघगूंजैपराकबुसंकनमांनैं॥अर्ड्डनजातेपोंनउ
लटिऊरधकौंआंनैं॥साषीसबदनिर्मलकहीकथ्यापदनिर्वा
न॥पूरनप्रगटमहिमाअनंतकरिहैंकौनबषांन॥१८॥श्रीरामा
नुजपधतिप्रतापअनटलक्ष्मणअनुसरयौ॥सदाचारमुनिवृत्त
भजनभागवतउजागर॥भक्तनिसोंअतिप्रीतिभक्तिदसधा
कोआगर॥संतोषीसुविसीलहृदैस्वारथनहिंलेसी॥परमधर्म
प्रतिपालसंतसंतमार्गउपदेसी॥श्रीभागवतबषांनकैंषीरनीर

भक्त. अवरनकस्यो ॥ श्रीरामानुजपद्धतिप्रतापनटलक्ष्मणअनुस-
स्यो ॥ ७९ ॥ दधीचपाछेंइसरीकरीकृष्णदासकलिजीत ॥ कृष्ण-
दासकलिजीतिन्योंतिनाहूसमदीयो ॥ अतिनिधिधर्मप्रतिपाल
३८ प्रगटजसजगमैंलियो ॥ मीनताकीअवधिकनककामिनिन
हिरातो ॥ रामचरनमकरंदरहतनिसिदिनमदमातो ॥ गलतैंग
लितअमितगुनसदाचारसुविनीत ॥ दधीचपाछेंइसरीकरी
कृष्णदासकलिजीति ॥ ८० ॥ टीका ॥ बैठेदेगुफामेंदेखिसिंघघ
रआयगयोलयोकोविचारहोअतिथिआजुआयोहै ॥ देईजां
घकाटिफारिकीजियेअहाररुचिजूमहिमाअपारधर्मकैबिन कृष्णः
बतायोहै ॥ दियोदरसनआयसांचमेंरह्योनजाइनिपटस- १८७
चाईछपजान्योनबिलायोहै ॥ अनजनलदेवजीकौंझीपतजगत ६७

नरकरिकैंनिसकैजनमननरमायौहै ॥७॥ मूल ॥ नलीनांति
निरबदीनक्रिसदागदाधरदासकी ॥ लालविहारीजपतर
हतनिसिबासरफूल्यो ॥ सेवासहजसनेहसदाआनंदरसझू रीति
ल्यो ॥ नकनिसोंअतिप्रीतिसबहीमननाई ॥ आसेअधिकउ
दाररसनँदहरिकीरतिगाई ॥ हरिविश्वासहियेआनिकैंसुप
नजुआननआसकी ॥ नलीनांतिनिरबदीनक्रिसदागदा
धरदासकी ॥ ८१ ॥ टीका ॥ तुरहानपुरढिगबागतामैंबैठेआ
इकरिअनुरागरहसागिपागेस्यामसौं ॥ गांवमैंनजातलोग
कितेहाहाखातसकघेमानिलियेगातनहींकामऔरकामसौं
पर्योअतिमेहदेहबसननिजाइहारेतबहरिप्यारेबोलेसुर
अनिरामसौं ॥ रहैरकनाह्नतकदीजाइल्यावोतनकैंमंदि

नक्त. रकरागैवोतैरोनस्योघरदामसौं॥८॥नीगिनीबिल्पाएदहरिबचनसु
नाएतबकरवाग्रैऊंचैमंदिरसंवारिकें॥धनुपधराएनामला-
लअो विहारीस्यामअतिअनिरामरूपरहतनिहारिकैं॥करें
साधसेवाजामेंतिपटघुसन्नहोतवासीनरहतअनसोवें-
पात्रफारिकें॥करतरसोईजोइराषीहीछिपाइसामाआएध
रसंतआपुकहीज्पावोप्पारिकें॥९॥बोल्योघन्नृपेरदेता
केलियेरापोकबुनाष्योतबआपकाढेनोरओरआवैगो॥करि
केंप्रसाददियोलियोसुषपायोसबसेवारीतिदेषिकहीजगजस
गावैगो॥आतनएनृपेदगिएतीनजामिठरिरहेकोधनरिकहे कृष्ण:
कबधेबुटावेगो॥आयौकोकतातीसमैंदासनरूपेसाधरेबोले १५०
गुसीमलेकेंमारोकितोपावेगो॥१०॥मस्योवहसाहमतमोपेक ५०

छुकोपकियौकियौसमाधानसबबातसमकाईहै॥तबतोग्रसं
ननयौअन्नलगेजितेतेदेमोसेवाहकबलै।यौसाधकरुचिउप
जाईहै॥रहेकोऊदिनपुनिमधपुरीवासलियौपीयोब्रह्मर
सलीलाअतिसकषदाईहैं॥लालनेलफाएसंतनीकेंतुक्काएगुन
[illegible]जानेंजितेगाएमति।सुंदरलगाईहै॥११॥मू
ल॥हरिजनसींवस्वामीसरसश्रीनारायनदासअति॥नक्कि
योगजुतसुहठदेहनिजबलकरिराषी॥द्वियेसरूपानंदला
५ लजसरसनानाषी॥परिचैपचुरप्रतापजानिमनिरहसिस
हाईक॥श्रीनारायनप्रगटमनौलोगनिसकषदाइक॥नितसे
वतसंतनि[illegible]तदानानतदेग्रागति॥हरिजनसींवस्वामीस
रसश्रीनारायनदासअति॥८२॥टीका॥आएवद्रीनाथजूतेंम

न०रू० सुगनिहारिनिंननचैंनननयोरहैजहांकेसोजकोवारहैं॥आवैदर
सनीलोगजूतिनकोमोगहियेंरूपकोननैमहोतकियोयों वि
चारहैं॥करैतपर्वंरीसुषपावतहैंनारीकोऊजानैंनषनाव
उरनावैसोअपारहैं॥आयोएकडुष्टपोटसुष्टसोतोसीसदइ
लईचलेमगमेंसोधीरजकोसारहैं॥१॥कोउबडोनरदेषिमं
गपहिचानिलिएकिएडनामनूमिपरननेहकों॥जानिकें
धनावलीनेंपावमदाडुष्टकुनेंकष्टअतिपायोबूझ्योअनिमा
नदेहकों॥बोलेआपचिंताजिनिकरोतेरेकामहोतनेंननी
रसोंतमुषरेषोंनहींगेहकों॥नयोगुपदेसनकिदेसाउनिजा रूपमः
न्योंसाकूत्राकिकोभेवेत्राइहांजानेनावमेहकों॥२३॥मूल १८५१
नगवानदासश्रीसहितनितसुहृदसीलसज्जनसरस॥नजन ७०

नावत्र्याछ्रूउगृहउगुनबलितललितजस॥ श्रोताश्रीनागवतर
दूमिगपातात्र्यद्दरस॥ मथुरापुरीनिवासत्र्यासपदसंतनइक
चित॥ श्रीजुतषोजीस्यामधामसुषकारत्र्यनुचवहित॥ त्र्यतिगंभी
रऋधीरमतिकुलसतमनजाकेंदरस॥ नगवानदाससश्रीसहि
तनितरूहलदसीलसकुनसरस॥ ०७॥ टीका॥ ज्ञानिवेकोपन
पृथ्वीपतमनत्र्याइमोंडुहाईलेटिवाईमालातिलकनधरिये
मानित्र्यानिघानत्रोनकेतिकनिस्यागिदिएँनहीजातिजानिबू छि॥
गमारिमारिये॥ नगवानदासनरत्नक्रिसुषरामिनस्योकस्योले
सुटेग्रविचारीतिलागीप्यारिये॥ रीझ्योनृपदेषिरीफिमथुरानि
वासपायेमंदिरकरायेहरिदेवसोनिहारिये॥ ४ध॥ मूल॥ नक्त
पद्मनदासतायदनिवहीकल्पानकी॥ जगन्नाथकोदासनि

भक्त॰

भक्त॰ ललक्ष्मीनारायन॥ जाकसुजसँहजदिक्तटिलकलिकल्ष स

जुधाइक॥ श्रीमपाश्वटलस्फवगटस्कोनटकटकनिस्कंबंदा

क॥ श्रतहीप्रचंरुमारतंडसमतमखंडनदोर्दंडवर॥ नरे

स्नरूननवतोषकरसंतनृपतिवासोंकुंवर॥ ८८॥ टीका॥

जगताकोपनमनसेवाश्रीनारायनजूनयोंहैसोपाराय

नरहैमोलासंगही॥ लरिबेकोंवेलेश्रागेंश्रागेंसदारहेपा

छैंल्यावेजलसीसडेसनस्योंहियोंरागही॥ सुनिजसवंतश्रौ

स जैसिंघकेंडलानयोंदेष्योदिलीमांकनोंरुल्यावतश्रनंग

ही॥ नृमिपरविनेंकरीधरीदेहतुमहोनेंजातंपायोनेहनीजि कुल्सः

गएयोंप्रसंगही॥ ८५॥ नृपतिजेसिंघजूसोंबोल्योकहानेहमे १५८

रेंतेरीजोबढिनताकीगंधकोनपांउंमें॥ नामदीपकुंवरसो ७५

मिलाषराजाकीनीकृटौंश्राएद्धानीजेसोख्रसंगमें ॥८५॥ मूल ॥ गोविंदचंदगुनग्रंथनकौंषर्गसेनवानीवीसद ॥ गोपीगुवालीपतमानतनामनिरनैकियोनारी ॥ दानकेलदीपकप्रचुरअतिबुद्धिविचारी ॥ सषासषीगोपालकाललीलामैंवितयो ॥ काइथ्थकुलउधारनक्तिहटश्रनन्यनतननचितयो ॥ गोतमीतंत्रनुरधानधरितनत्यागयोमंगलसद ॥ गोविंदचंदगुंनग्रंथनकौंषर्गसेनवानीविसद ॥ ८६ ॥ टीका ॥ ग्वालीयेरवासमसदरासकोसमाजकरैंसरदउज्यारीअतिरंगचढ्योनारीहैं ॥ नावकीवठिनहरूपकीवठनितैंपेईकीरटनिजोरीसकंदरनिद्दारीहैं ॥ येलतमैंजाइमिलेत्यागितननमावनासौंफेलतअपार-कप्रीतिदेहवारीहैं ॥ येमकीसचाइताकीरीतिलेदिषाईनईनावकिनेसरसाईवा

नक्ष॰ तलागीप्यारीहैं ॥पद ॥मूल॥ सखवास्यामममननावतैगंगग्वाल
गंनीरमति ॥ श्रीस्यामाजूकीसषीनामश्रागमविधिपायेग्वाल
पृ॰ गायबजगांवधकनीकेकेरिगाये॥ कृस्नकेलिस्कषसिंधुअघ
मे॰ टतुरव्रंतरधरई॥तासैंनितमगानअमदआलपनकरई॥ब्र
जबासअबासवृजनाथगुरुनक्षचरनरजअनन्यगति॥सखवा
स्यामममननावतैगंगग्वालगंनीरमति॥पद ॥टीका॥ दृष्टीपतिअ
यौवृंदावनमनचाहनईसारंगस्कनावे ... कोउजोरावरिल्याए
हैं॥बह्लनकूसंगस्करनरत हीछायेरंगअतिहीरिझायेमोहागा
अस्कवाबड़ाएहैं॥ वहीकविजोरिविनैकरीपेनधरीहियेजि
येवृजनमिहीसौबचनस्कनाएहैं॥केदकरिसाथलिदेहि
लीतेंछुटायदियेहीदासनेवरनैंआएध्यानपाएहैं॥८७॥ कृष्ण॰ १३५ ७८

न.रू. रस्याभ्यरैलेवड़ाइहैं ॥ ६८ ॥ कियोप्रतिपालतियापूरीकोअकालम
मासनयोजबसमैविदाकीनीतवगाइहैं ॥ अतिपछितातवहबात
अबपावैकहांजहांसाधसंगरंगसनारममईहैं ॥ कंरंजाकोछि
ष्यसंतसेवाहीवतावैकरीजोअनंतरूपगुनचाहमननईहैं ॥
नानाव्रजबषानकियोमोकोंइनमोलिलियौदीयोद्रसाईसब
लीलानितनईहैं ॥ ६९ ॥ मूल ॥ श्रीअग्रअनुग्रहतेंनएशिष्य
सबैधर्मकीधुजा ॥ जंगीप्रसिद्धप्रयागबिनोदीपूरनेवनवारी २
नरसिंघँनलनगवानेदिवाकेरहनत्रुतधारी ॥ कोमलहृदय
किसोरजगतजगान्नाथसलधो ॥ श्रीरंगअनुगतउदारषेमषीची रूसः
धरमधीलघकऊधो ॥ त्रिविधितापमोचनसबैसोरनँजिनिसिर १७२१
नुजा ॥ श्रीअग्रअनुग्रहतेंनएशिष्यसबैधर्मकीधुजा ॥ ४५ ॥ ७२

गर्ईडरकल

नरिल्पावोजलयेंनल्दईतस्मईसवनकनिजिवाईहें॥६६
वेगिजलल्माईदेपिश्र्यागिसीवराईहियेंकांकेमुकुनाईदुष
सागरबुराईहें॥विमुषबिचारितियाकुवाजूनिकारिदईग
ईपतिकियोश्रोरश्रसीमनश्र्याईहें॥पस्योईश्रकालबेटाबे
टीमानपालसकेतके।कोनगेरमतिश्रतिश्रकुलाईहें॥लि
येंसंगकस्योजोईपुत्रसुतानुषेनोईश्र्याइपडीकीयेंमेंस्वामी
कोंसुनाईहें॥६७॥नानाविधिपाकहोतसंतश्र्यावेजेसेंसोत
सुषश्र्यधिकाईरीतिकेसंजातगाईहें॥सुनतबेचनवाकेदी
नदुषलीनमहानिपटप्रवीनमनमांकदयाश्र्याईहें॥देषि
पतिमेरोश्रूमतेरोपतिदेषिवाहिकेसेंकेंनिबाहिसकेंपरी
कवनाईहें॥रहेगारिजायोंकरोपकुंचेश्रहावतुमेंमहिमानिहा

नक्त: रिरीझेस्वामीहसैहैं॥धर्यौजानरायनामजानिलईहीयकीबा
तश्रृंगमैनमातसद्यसेवासुपरसैहैं॥६४॥चलेहारावतिछाप
ल्यावैयहमतिनईश्रागपाश्रनुदईफिरिघरहींकौश्राएहैं॥क
रैसाधकसेवाधरौनावहरहृदियेंमांफिटरोजिनिकहूकीजेजे
जेमननाएहैं॥गेहहींमैंसंपचक्रआदिनिजदेहनएनएए ना
कौतुकसुप्रगटजगगाएहैं॥गोमतीसौंसागरकौसंगमसोर
ह्योसुन्यौसुमिरनीपगाइकैंद्योंरोउलैमिलाएहैं॥६५॥नएछि
प्यसापाश्रनिलापासाधकसेवाहीकीमहिमाश्रगाधजगश्रा
टदिषाईहैं॥आएघरसंततियाकरतिरसोईकोईआयोबा कम:
कौनाईत्ताकौंषीरलैवनाइहैं॥कूबाजूनिहारिजानीयाकौ १७२
हितसोदरसौंकीजियैविचारएकमतिउपाईहैं॥कही ७१

रिष्याएधर्मरामनामधुनिकाजकानपरीवीत्योमासकहीवात
प्यारीहैं॥चलेवाहीठौरस्वरसुनिडीतिनौंरपैरीतिकुबुझ्यो
रयहस्कधिबुधिराखीहैं॥६१॥मारीइविकरीसबपढंचेनिक
टतबबोलिकैसुनायोहरेंवानीलागीप्यारीयें॥हरसनननयो
जाइपाइलपटाइगएरहीमिहरावसीकैकबहुनिहारियै॥
धस्योजलपात्रएकदेषिबकेपात्रजानेंश्रांनेंनिजगेहसृजाला
गीअतिनारियै॥नईजीरहावन रनमडिञ्जपारञाएमहिमा
विचारबडुसंपतिलेवारियें॥६३॥सुंदरसाँपुसामल्याएपध रू
रायवेकौंसाधुनिजधर्मआयरूबाजकेबसेहैं॥रूपकौंनिर
हारिमननमेंविचारकियोआपकैरंकपामोकौंइनुअवलकै
लसेहैं॥कारतनपाबसंततरतननैंकककंकहीजगननंतद

नक्र:
स्यामसेनकेवंशचौधरिपीपाविविराजे।तेतारनगोपालकेंके
वलन्हे बेमोललियो।माधककरीमांगसेवैनक्रतिनपरहेंब
लिहारिगियो॥४४॥टीकाश्रीकृबाजूकी॥कहियतकम्ध्व
कुल रजगोविस्तारकियोकेवलस्कनामसाधसेवाछेतिरामहे
साएबडुसंतप्रीतिकरीलेज्वनंतजाकैसंतकौनयावें
वैपैंसीघोनहीधामहे॥वसीहेगरजचलेकरजतिकामिवे
कौबनियानदेतकृबापोटीकीजेकामहे॥कीयेबोलकहे
तोललियोनीकेंरालिकविहितसौंजिवाएजिकेंप्यारोएक
कृष्ण: स्यामहे॥६२॥गएकृबापोटदिवेकौसवाजेपौतचारेनामजना
१७० कामजानेपौवानेनयोसकषनारीहे॥आईरतनृमिकृमिमांगी
७० गिरदवैवामेकेनेकहजारमनहोतकेसे।नारीहे॥सोककक

नतकरैं चारिजामनमें ॥ रहे तुम्हिं पांवनयें नृषें दिनतीन बीते उआए

इ धलैइ बीनएतें रंगस्यामममें ॥ मांग्यो नेंकुपानी ल्यावोफेरिव

हश्रानीकहांउषमतिमांतिनिशिकहीकियोकाममें ॥ पच ॥ पा

नीसोंनकाजब्रुजन्नमिमेविराजइधपीवोघरघरयदहश्राज्ञाश्रनु

दईहैं ॥ एतौव्रुजवासीमबेषीरकेउपासीकेसेंमोकोंलेनदेहें ॥

कहीदेहैंमननानदेहैं ॥ डोलैंधामधामस्यामकह्योजोइमानि

लियोदियौपरवेहूपरतीतितबूनईहैं ॥ जहांजाछिपावैंपात्र

बोऊश्रापदूंटल्यावैं श्रतिसुषपावैंकीनीलीलारसमईहैं ॥ ६०

॥ मूल ॥ माधूकरीमांगिसेवैंभक्ततिनपरहोंबलिहार ॥ यो

गोमापरमानंदश्रधनेश्वारिकामक्करांषोरा ॥ कालषसांगाने

रनलोनगवानकोजेरा ॥ बीठलटोंपै षेमपंनागूनोरेगाजे ॥

नेक. मथुराब्रजभूमिरमतसबहीकौंतोषत॥परमधरमहृढकरन-
देवश्रीगुरुश्राराध्यौ॥मधुरबचनकबिदेरहैरहृहरिजनसुष-
माध्यौ॥संतमहंतअनंतजनजसविस्तारतजाकृनित॥श्रीस्वा-
मीचतुरोनगनमगनरैंनदिननजनहित॥४४॥टीका॥श्रावेंगु-
रुगेहयैंमनेहसौंलैसेवाकरैंधरैंहियेसांचौनावश्रुतिमति-
नई नीजिये॥टहललगाईदईरूपवतीतियाहियेवासौंकहि
स्वामीकहैंजोईकीजिये॥देष्यौतनरजावश्रंगसंगकोलपावन
योदयोघरधनवधूकृपाकरिलीजिये॥क्षामपधराइकृपपाइ
केंयुनामकरीधरीब्रजभूमिउरबसेरसपीजिये॥५५॥श्रीगोविं कृष्ण:
दचंदजूकौनोरहौदरसकरिकेसबसिंगारराजभोगनंदग्रा- १६७
ममैं॥गोवर्द्धनराधेकुंडकैकेंग्रावैंवृंदावनमनमैंकोलैसि- ६७

सी॥ अच्युतकुलकृष्णदासविश्रामसेषसाईकेवासी॥ किंकरकुंडा
ल कृष्णदाससेषमंसोहगोपानंद॥ जेदेवाघवबिठ्ठरदयालदामो
दरमोहनपरमानंद॥ नरुवरघनाथीचतुरोननगनकुंजआेक
जेबसतअब॥ निर्वैरनिएसंसारतेंतेमेरजजमानसब॥ ५२॥
कृ टीका॥ ऊधिष्ठोहिगहीमैजेतारनविठ्ठरनयेोनयोदविनकृ
साधुसेवामतिपागीहैं॥ बरिषाननईसबषतीसूकिगईचिं
तानईपनुआगपाढईबनोबनजागीहैं॥ षेतकोंकटावोआे
गहावैलैनकोवोपावोदोहजारमनअन्नसुनीषीतिजागीहैं
करीवाहीरीतिलोगदेषंनपप्रीतिहोतिगाएहरिमीतिरामिला
गीअनुरागीहैं॥ ५३॥ मूल॥ श्रीस्वामीचतुरोननगनमगनरैनिदि
ननजनहित॥ सदाजुक्तअनुरक्तनक्तमंगलकोपोषत॥ उरि

नेरू किधौंयौंविचारतुंचौंसिंघासनमालाधरितुलसीनिहारिहरिसि-
गांनकरयौनारिऐं॥एकओरबैठेमीरनिरषैनकोरहूगामगान ने
किसोररूपसुधिलेविसारियै।चाहैंकछुबारांपरैंओरचकहौसा
नहाथ्यरीकिसनमांनकीनोंमीचलागीप्यारियै॥५६॥मूल॥गु
नगनविसदगोपालकेएतेजननएन्हूविस्दा॥बोहिथ्थरामगोपा
लकुंवरबरगोविंदमांडिल॥छीतरस्वामीजसवंतगदाधरअनं
तानंदनल॥हरिनाभमिश्रदीनदासंबछपालकन्हरजसगा क
यन॥सोझूरामदासस्यामदासदासचतुर्भुजनिहरिनारायन॥कृस्नजीव
नंनगवानजनस्यामदासविहारीअमृतदा॥गुनगनवि- कृस्न:
सदगोपालकेएतेजनमन्हूविस्दा॥५७॥निर्वेदनएसंसारतेंते १६८
मेरेजजमानसब॥उदवंरामरेंनिंपरसरामगंगाधूपेतनिवा ६९

प्रेमपुंजअग्रगेंबढ्यो। पदलीनोप्रसिद्धश्रीतिजामेंहरनाभो॥ अक्रू
रतनमयनयोमदनमोहनरंगरातो॥ नाचतसबकोअग्रादिका
हिपेयरहवनिछावे॥ चित्रलिषतसोरह्योहैनेंगदेसीजूवतावे॥
हंडीयासराइदेषतउनीहरिपुरपदवीकोंचढ्यो॥ नृतकनराय
नदासकोप्रेमपुंजअग्रगेवढ्यो॥ ५० ॥ टीका ॥ हरिहीकेआगेंनृ
सकरेंहियेंधरेंयहहीठौरेंदेशदेशनिपेंजहांभक्तनीररहें॥ हंडी
१ यासराइमध्यजाइकेंनिवासलियोलियोसुनिनामसोमलेछ
जातिभीररहे। बोलिकेंपगाएमहाजनद्विजनसबैंआयोहैस
दनगुनील्याबोचाहपीररहें। आनिकेंसुनाईनईबडीकबैना
ईअबकीजेजोईनाईवदनिपदधीररहें॥ ५१ ॥ विनांप्रभुआगें ५
नृत्यकरियेंननेमयहैसेबावाकेंआगेंकहोकैसेंविस्तारियें॥

नक्र· केतिजारैमांझनक्रैसरासकरीकरीएकबातजाकोंअगस्तु
नाइयै॥आयोनेषधरीकोगकरैसालिग्रामसेवाफोलततसिंघा
सनपैंआनिनीरछोड़ियै।स्वामीकेजूशिष्यनयोजिनहूंकेंना
वदेषिवाहीकोउनाबस्त्रायकस्रोहियनाइयै॥तेंकुआप
चलोंतेंहिरीतिकोंविलोकियेजूबडेमबैठिकहीइषेनहीजाइ
यै॥पद्य॥पोइपविगएलैकेंजाइढिगबाढेनएचाहतनफिरायो
पेंनफिरयोसोचपरयोहै।जानिगयोआपकबुयाहीकोउताप
हैपैंमारोंकरिजायपयोंविचारमनधरयोहै॥नृवलेचलाईनक्र
तेजआगेंआईनहीवाहीलपटाइनयोंऐसोमांनोंमरयोहै॥
कोकरिदयालजाऽजिवायोममकायोश्रीतिपंथदरसायो। १६३
हयेंनायोशिष्यकरयोहै॥पद्य॥मूल॥नृतकनरायनदासको ६७

कुलकांथडाजगन्नाथसीवांधरम॥ श्रीरामानुजकी रीति प्री
तिपनलैदेधरयो॥ संस्कारसमतत्वहंसज्यौंबुधिविचार्योसदाव
रमुनिवृत्यइंद्रियापथनितजागार। रामदासभक्तसंतसेवनन्य
दृढधाकोत्रागार॥ पुरुषोत्तमप्रसादतैंजैंनेत्रंगप। दृढ्यौब
रम॥ पारीषउमिदकुलकांथडाजगन्नाथसीवांधरम॥ १८
कीरतनकरतकरस्रुपनकुंमथुरादासनमंडीयो॥ सदा
चारसंतोषसुहृदसुसीलसुभ्रनासैं॥ हस्तकदीपकनैदे
मेढितमवस्तुप्रकासैं॥ हरिकोहियेंविस्वासनंदनंदनबू
लनारी॥ कृष्णकलससांनेमजगतजानेंसिरधारी॥ श्रीवर्द्ध
मानगुरुबचनरतिसेंसंग्रहनहीछांडीयो॥ कीरतनकरत
करस्रुपनकुंमथुरादासनेमंडीयो॥ १९॥ टीका॥ बास

नरू. नईरांनीजूकीसुधिलईरूकनीनीकीनांतिञ्आपनमृकेकैंञ्आ
एहैं॥नृमिपरमाष्टांगकरीकहैंहरीमतितिनरीदयाञ्आयवाके यो
वचनरूकनाएहैं॥करतधनामराजाबोलीञ्जजूलालजूकै ।
नैंकुफिरिदैषोएकञ्ओरएलगाएहैं॥बोल्योनृपराजधन
सबहीतिहारोधारोपतिपैंनलोनकहीकरासकपनाएहैं
५१॥राजामानसिंघमाधोसिंघनुनैनाईचेठनावपरकहंत
हांवृमिबेकोंनईहैं॥बोल्योबडोञ्रतात्र्बकीजिएजतन
कौंननैनांनतियानकोकहींछुटैसुधदईहैं॥नैकुध्यांनकि
यौतवेञ्आंनिकैकिनारोलियोहियोकुलसायोजेवचाह ह्ल:
नईलईहैं॥कस्योञ्आईदर्शनविनैकरिगयोनृपञ्आतिही १६८
ञ्नृपकथ्याहियेंञ्आयगईहैं॥५२॥मूल॥पारीपधमिव ६६

दियो

बुलायलियौँकहिकटीनाकलोहनिरवारियै ॥ मारिवोक-
लंककहूनआवेयौंकनावेन्नृपकाकुबुधवंतनेंविचारि-
लेतुचारियें ॥ नाहरजुपीजरामेंदीजेछोडिलीजेमारिपा
छेंतेंपकरिवहवातदाविमारियें ॥ सबनिकहाईजाइक
रीमननाईआयौदेष्यौवाघवासिंकहीसिंघजूनिहारि न
दे ॥ ४८ ॥ करैहरिसेवानरिरंगअनुरागहगसुनीयहवा
तनेंकुनेंननतदारेहैं ॥ नावहीमेंजानेतुरिअतिसनमा
नेंअहोआजूमेरेनागश्रीनृसिंघजूपधारेहैं ॥ नावनांस-
चाईवहीसोनालेदिषाईफूलमालिपहिराईरचिहीं- व
कोलागेप्यारेहैं ॥ नौ नितेंनिकसिध्याएमांनौंषेनपाविआ
एविमुषसमुहतेतकालमारिमारेहैं ॥ ५० ॥ नृपकोंषबर-

नृकृ. डीन्न्राजन्तुमहितकरिजाबिये ॥ ५३ ॥ गएनरपत्रदियोसीससौंलगा
यलीयोवांचिकेंमगनहियोरीफिबकूउदईहैं ॥ नोबतबजाईद्वार
कावांटतबधाईकाहूनृपतिसुनाहीकहीकहारीतिनईहैं ॥ पूछें
नृपलोगकह्योमिटेसबसोगनएमोडीकेजुजोगस्वांगकियो
बनिगईहैं ॥ नृपतसुनतबातअतिदुषपगातनत्यौंबैरनावचलायो
दोत्यारीइहवनईहैं ॥ ५४ ॥ नृपसमझायराख्योटेग्रामैंचवावव
केबुधिवंतजनआइस्रुतमोंजताइहैं । बोल्योबिधैंलगमकोटिकै
टतनषोएएकनरूपरञ्चोंवेकामयदमनआईहैं ॥ पाइपी
रमांगिलईदईजुभसनन्तुमराजानिचल्योजाईकरोंजियमा सि
नाइहैं ॥ आयोनिजपुरदिगढरिनरमिलेआनिकह्योसोबा १६५
वांनिसबचिंतानपजाईहैं ॥ ५५ ॥ नवनषवेश्याकियोमंत्रीजो ६५

लामकियोनरनिजताइदियोकह्योआवोमोहीकेरपस्योमनपी
रमैं॥ ४४॥ कोपनरिराजागयोनीतरिमोसोवनयोपाछेघूछलह्यो
कह्योनरनिबघांनिकैं॥ तबतोविचारीअहेमोडीहीहमारीजाति
नयोसुघमातनकिनावनरआनिकैं॥ लिष्योपत्रमाजीकोंजुश्री
त्तित्रियमाधीजोपैंसीमपरबाजीआयरायोतजिपानकैं॥ मना
मधिरूपकहीमोडीकोनिरूपनयोरहैंअबमोडीकेहीनलोम
तिजांनिकैं॥ ४५॥ लिष्योटैपगाएवेगिमानसलेआएजहांरा
नीनकसानीहाथदईपत्रीबांचिये॥ आयोचढिरंगबाविमुत
कोउसंगबारनीजेजेफूलेलहरिकिएषेमसांचिये॥ आगेंसे
वापाकनिसिमहलबसतजाइल्याइयाहीवोरघुनीकेंगा
इनाचिये॥ अन्ननपस्यागिदियोदियोलिषिपत्रपुत्रनईमो

भक्त: लाषलाषनंतिनिसोंकैसेंकैंउचारियें। आगपाजोईदीजेसोईकी
जेसुषचाहीमेंजूझीतिन्त्रबगाहीकहीकरैलागीप्यारियें॥४२॥
प्रेममैंननेमदेमघ्यारलैनुमंगचलीचलीहगधारसोपरोसिकैं।
जवाएहैं॥नीजिगएसाधनेदसागरआगाधदेषिनेंननिनिमेष
तजिनएमननाएहैं॥चंदनलगाइआनिवीरीउषवाइस्पामच
रचाचलाइचषरूपसरसाएहैं॥धूमिपरीगांवफूमिआएसब
देषिबेकौंदेषिनृपपासलिषिमानसपगाएहैं॥४३॥बैकरा
निसंकरांनीबंकगतिलईनईदईतजिलाजबैबीमोहनकी
नीरमैं॥लिष्योलैदिवाननरआयसोबषानकीयोबांचिसु हस्त:
निआंचलागीनृपकेशरीरमैं॥प्रेमसिंघसुततनाहींकालसार १६४
सालआयोजालपैंतिलकमालकंठीकंवतीरमैं॥नृपकोंमि ६७

ये॥ श्रावैंद हरि प्यारे रति कैं ल्यावैं वेलि वाइ इहां रहैं तेक वाइ पा
इस चितपजाइयैं॥ नाना विधि पाक सामाग्री आगैं श्रां निधरो श्राप
ना विचिगटे षोस्या महगानलषाई मे॥४०॥ श्रावैंद हरि प्यारे साधक
सेवाक रिटारैं दिन क्यों हू पाव धारैं रजि कैं व्रज जन्म प्यारियै। जु
गलकिसोर गावैं नैंन नि बहावैं नीर कै गई श्रधीर रूप हग नि
निहारियै॥ छली वाष वासि सौंज रांनी कौं न श्रंगजाकें रतनी छ
टक संग नंना सुषना रियै॥ चलीउ विहाय हग सोर ह्योन ही जा
तन्न हो मसो उ षलाज बनीत नक विचारियै॥४१॥ देष्यो मैं विव
रिह विरूप रस सार ताकौं कीजि टेव्रह ग्ला जकों नंनी कैंटा
र्यैं॥ तोक तंत उत रिश्राई जहां साधक सुष दाई श्रा इलप गइ या
इ विनती लै धारियै॥ संत निजिं वाइ बकी निजक रिब्र मिलाष

नक॰

कहुकतपाइकौजेमोहनदिषाइदीजेतबहीतोजीवेवेतोश्रान
गरहेरहेहैं॥दरसनहरिराजछोडेंलोटैंधूरिपैंनपांवेंछविपूरिएक
प्रेम बसकरेहैं।करोहरिमैबानरिनावधरिमैवापकबानर
सपानदेबषानमनधरेहैं॥ऊ॥इंद्रनीलमनिरूपश्रगटसरू
पकियोलियोवहैनावयोस्वनावमिलिचलीहैं।नानाविधिरा
गनोगलाउकौश्रयोगजामैंजामिनीस्वपनजोगनईरंगरलीहैं
करतसिंगारछविसागरनवारापाररहतनिहारत्याहीमाफ
रीसौंपलीहैं॥कोटिकतपाइकरैंजोगजगपपारपरैश्रेपैंनदी
पावैंमदहरिछेमगलीहैं॥ऊ॥देष्योहीचहतततरंककहतनपा कल॰
इकहाश्रेतोचाहिबातकहेंकौनकौंसुनाइयै॥कहीजूबना १६२
वोठिगमहलकैंगेरएकचौकीलेबैठाबोचहूंश्रोरसमकाइ ६२

माधोसिंघताकीजानौंतियाजाकीबातलैबषांनियैं ॥ ढिगजो
षवासिनसोस्वासनिनरतिनामरटततजटितप्रेमरानीउरझो
नियैं ॥ नवलकिसोरकनूंनंदकेकिसोरकवृंदावनचंदक
हिस्रोषेंनरपानियैं ॥ क्षनततविकलनईक्षनिबेकीचाहनई
री ॥ तियहनईकछुवीतिपहिचानियैं ॥ व्य ॥ बारबारकैहे
कहाकहेउरगहेमरोबहेहगनीरहोसरीरक्षधिगईहै ॥ बू
झोमतबातसुषकरोदिनरातियहसदैनिजगातरागीसाक्ष
कपानइहै ॥ ख्य तिउतकंवारदेषिकसोसोविरहोपसबरसिक
नरेसनिकीबानीकहिदईहै ॥ टहलछुटाईस्रोमिरहांनेलैबे
गईवाहीगुरुबुधिस्राइयहजोनोंरीतिनईहै ॥ ज्ञ ॥ निसिदिन
सुन्यौंकरैदेषिबेकोंअबरबैरैदेषकेसेजातजलजातहगनैरहैं

वडीनक्रिमानज्ञानवद्दरसषानिक्षेपंकच्छुकलडांकैमें ॥ सु
निस्कधनसैयोनारीऊतीरिसवासोंटारीलीयेगांवकाटिफेरिदी
रहरिध्यांकैमें ॥ लिषिकेंपगाईबाईकैरसोऽकरनदीजैसाधक नीजै
सेवाकरिनिसिदिनगांऊमें ॥ २६ ॥ मूल ॥ गिरिधरनग्वालगोपा
लकोसरवासाचलोसंगको ॥ प्रेमीनकूपमिद्धगानन्त्रतिगद
गदवानी ॥ अंतरप्रेमसोंप्रीतिप्रगटरहैंनाहिनछानी ॥ नस्क
बसन रतश्यामोद विपिनतनेंविसारै ॥ हाटकपटहिंदानरीकिंतिन ॥ रिध
लततारै ॥ मालछुरैमंगलकरनरासरच्योरसरंगदै ॥ गिरिध
रग्वालगोपालकोसरवासाचलोसंगको ॥ ८७ ॥ निहालन्हैतषी
रग्वालसाधकसेवाहीकोप्यालजाकैंदशिघैचरनामृतजोत्रौर
त्तिसांचीपाइये ॥ संतननछू टेकतैंलेत

भक्त: अबरीतिकहौंकेसैंजातगाईहैं॥नलदिजपंचइकंगेरेसोअ
पंचमान्यौअन्यौसनामांफिकहैंछोडोनमेक वाइहै॥जाकेंहोअ
नावमतलेवोमेध्यनावजानौंमृतकथ्यौंबुधितो नारोंसुनि
नाईहैं॥७१॥मूल॥गोपालीजनपोषकोंजगतजसोदृ मान
री॥प्रगटअंगमेंप्रेमनेमसोंमोहनसेवा॥कलिजुगकलुषनि
लगपोहासतेंकबकुनछेवा॥बानीसीतलसुषदसहजगा
वंदधकनिलागी॥लछनकलागंनीरधीरसंतनअनुरागी॥अं
तरसुहृसदारहैरसिकनकिनिजउरधरी॥गोपालीजनपो
षकोंजगतजसोदाअवतरी॥७०॥रामदासरसरीतिसोंनली श्री
नीतसेवतनागन॥सीतलपरमसुसीलबचनकोमलमुषनि १०५
कसै॥नकृगदितरविदिविहरोबारिजजिमिविकसे॥अ ७४

तिन्ह्यानंदमनगमीग्रीसंतपरिचर्याकरई॥ चरनधोइ दंडौतविबि त
वधिनोजनविस्तरई॥ बछबननिवास विश्वासदृढिजुगल
चरन उरजगमगत॥ श्रीरामदास।रसरीतिसोंनलीनां
त तिसेवानगाति॥ ९९॥ टीका॥ अतिएकसाधुआयोनकिमा
वदेषिवेकौंवैरामदासपूछैंरामदासकौंनदे॥ उरेआपधे
एपावआवैरामदासअबरामदासकहांमेसंवादेऔरगोना
है॥ चलोजूअसाटलीजेदीजेरामदासआंनियहीरामदासपग
धारोनिजनोंनहै॥ लपटोनोपायनसोंचाउनिसमातिनांहि
नाइनसोंनच्योहियेंछाईजसजोंनहै॥ ९०॥ बेटीकोविवाहघ
रवडोउत्साहनयोकियेनानापकवानकोवेमांकधरेहै॥
कैरेरषवारीअतनातीदियेतारोरहैंऔरहीलगाइतारीपो

भक्त॰ ल्योनहीफिरेरहैं॥ आएगृहसंततिकैंपोटबंधवाइदईपायोयोंत्र
नंतस्कखद्धेसोनावनरेहैं॥सेवाश्रीविहारीलालगाईपाकस्व
छताईमेरमननाईसबसाधनरहरेहैं॥१८॥मूल॥ विठ्ठलसुत
स्कतघरजन्मरामरायहरिरतकरी॥ भक्तिग्यानवैरागपजोगश्र
तरगातिपागयो॥ कामक्रोधमदमोहलोभमत्सरसबत्यागयो॥क
थाकीरतनमगनसदाआनंदरसफूल्यो॥ संतनिरषिमनमु
दितउदितरविपंकजफूल्यो॥ वैरनावजिनडोह॥ कियतासुपा
गाषिसिषैपरी॥ विठ्ठलसारस्कतघरजन्मरामरायहरिरतिकरी
८४॥ भगवंतमुदितउदारजससरसरसनाआस्वादकिय॥ कुंं क्रम:
श्री जविहारीकेलिसदाअभ्यंतरनासे॥ दंपतिसहजसनेहप्रीतिप १८५
रमितपरकासे॥ अनन्यनजनरसरीतिमुष्टमारगकरदेषी॥ वि ८५

धिनिषेधबलत्यागिपागिरतिहूदे विद्वेषी ॥ माधवस्कतसंमतरी
सकतिलकदामधरिसेवलिय ॥ नगवंतमुदितनदारजस रस
रसनास्वाद नकिौ ॥ ८३ ॥ टीका ॥ सुजाकेदिवाननगवंतर
सवंतनएहंदावनवासेनिकीसेवाअैसीकरीहै ॥ विप्रकेगुसां
ईसाधकोऊव्रजवासीजावोदतबकुधनएकप्रीतिमतिहरी
है ॥ स्कनिगुरुदेवअधिकारीश्रीगोविंददेवनामहरिदासजाइ
देषेचितधरीहै ॥ जोगपताईसीबांधनुइधनातमांगिलियोकि
योउत्साहतनकपेषेअरवरीहै ॥ ४० ॥ सुनीगुरुआवतअमाव
तनक्योंहूंअंगरंगनरितियासोंयोंकहीकहाकीजिये ॥ वोली
घरवारपटसंपतिनेमारसबनेटकरिदीजेएकधोतीधारि
लीजिये ॥ रीकेसुनिबानीसांचीनकिैतेंहीजानीमेरेअतिम

नेक॰ नमानीकहिआंषेंजलनीजिये॥ याहीबातकांनपरीश्रीगुसांई
लईजानिआएफिरिवृंदावनपनमतिधीजिये॥२१॥रह्योनत्साहन
रह्यो देहकोनपारावारकियोलेविचारअगपामांगिचलेआएहैं
रहेसुषलहेनानापदरचिकहेएकरसनिर्वेहे ब्रजवासीजाबु
टाएहै॥कीनोघरचोरीतोऊनेंकुनाछ्णमोरीनांहिचोरीमतिरंगला
लप्यारोहेगह्योएहै॥बडेबडभागीअनुरागीरतिजागीजगमाधव
रसिकवातस्फनोंपितापाएहैं॥२२॥आयोअंतकालजानिवेस्फ
धिपिछानिसबआगरेतेंलेकेंचलेवृंदावनजाइयें॥आएआधी
हरिस्फधिआईबोलेदूरकैकेंकहांलियेजातहूंरकहीजोइध्या कृष्ण:
इये॥कह्योफेरोतनवनजाइवेकोंपात्रनहींऊरेवासआवेछि १५६
याछियकोंननाइयें॥जानहारोहाइसोईजाइगोजुगलपासके ५६

सेनावरासिताहीगौरचलिजाइयें ॥ ५२ ॥ मूल ॥ उर्द्धनमानुषदे
हकोलालमतीलाहोलीयो ॥ गौरस्यामसौंश्रीतिश्रीतियमुनाकुंज
नसौं ॥ वंसीवटसौंश्रीतिश्रीतिब्रजरजकुंजनसौं ॥ गोकुलगुरुजन
श्रीतिश्रीतिघरबारहवनसौं ॥ पुरमथुरासौंश्रीतिश्रीतिगिरिगो
वर्द्धनसौं ॥ वासअटलवृंदाविपिनइहकरिसोनगरीकियौ ॥ उ
र्द्धनमानुषदेहकोलालमतीलाहोलियो ॥ ५४ ॥ कविजनकर
तविचारबडोकोऊताहिननीजे ॥ कोऊकहैअवनीबडीजग
तआधारगनीजे ॥ सोधारीशिरसेससेसशिवभूषनकीनौं ॥ शि
वआसनकैलाससुभुजानगिरिंवनलीनौं ॥ सोरांवणजीत्योबालबा
लराघोइकसाइकदंडे ॥ अगरकहैत्रैलोकमैंहरिउरधारेतेब
हप्री ति डे ॥ ५५ ॥ हरिरुफजंहरिदासकेंसोंहरिनावैरासजस ॥ नेहपा

भक्तः रसपरअघटनिबहिचारोंजुगआयो॥ अनुचरकोनक्षर्षस्यामअ
पनेंमुषगायो॥ उत्तपोतअनुरागडीतिसबढीजगजानें॥ मुरंडवेस
रघकवीरनृस्पकीरतिजूबषानें॥ अगरअनुगगुनवरनतेंसीतापा
तिनितहोइबस॥ हरिक्रजसपुीतिहरिदासकेंस्योंहरिनावेदासज
स॥ ८६॥ नक्षर्षसुनतसंतनिकोअचिर्यकोऊजिनिकारो॥ दुर्बासा
प्रतिस्यामदासबसताहरिनाषी॥ धुवगजधुनिपक्षाद्रामशिव
रीफलसाषी॥ राजसूयजदुनाथचरनधोइजूंविनुवाई॥ बडपांम
वविपतिनिवारदियोबिषविषयापाई॥ कलिविसेपपरचोअगट
आस्तिककेकेंचितधरो॥ नक्षर्षसुनतसंतनिकोअचिर्यकोऊजि भक्तः
निकरो॥ १८७॥ साषीफलअरक्तिकी॥ पादपपेनहीसीचतापावे १८७
अंगअंगपोष॥ पूर्बजागुनवरनतांसबमानियोसंतोष॥ १॥ नक्षजि ५७

तेन्नलोकमैंकथ्थकौंनपैंजाय।।समुद्रपानअरुशाकैरेकहाचिरीयाप
टसमाय।।३।।श्रीमूर्त्तिसबवैस्नवलषकदीर्घगुननिअगाध।।अंगोपा
ङ्गैंबरनतांजिनिमानोंअपराध।।फलकीसोभालानतरुतरुसोभा
फलहोइ।।गुरुशिष्यकीकीरतिमैंअचिरजनाहीकोइ।।४।।चारिजुग
नमैंजेजनगततिनकेपदकीधूरि।।सर्वसुसिरधरिराषिहूंमेरीजीवनि
मूरि।।५।।जगकीरतिमंगलउदैतीनोंतापनसाय।।हरिजनकोउ
सबरनतेंहरिहृदैअटलबसाय।।६।।हरिजनकोजसबरनतेंयो
नरककैअसूयाआय।।इहांउदरबाढैविथ्याअरुपरलोकनसाय।
७।।जोहरिप्रापतिकीआसहैतोहरिजनकोगुनगाय।।नातरुसु
कृतनूंजेबीजज्योंजनमजनमपछिताइ।।८।।नकुहामसंयहकरै
कथनअवनअनुमोद।।सोप्रभुकोप्यारोसुतज्योंवैवेहरिकीगोद

भक्त॰

९॥ अच्युत कुलि जस एक बेर हू जाकी मति अनुरागी ॥ उनि की भ-
क्ति न जन सक हूँ ति को निश्चै होइ विभागी ॥ २०॥ भक्त दाम जिन जिन
कथी तिनकी जूठ निपाइ ॥ मो मति सूं अक्षर द्वै की नौं सिलो बनाइ मा
२१॥ काहू के बल योग यग्य ॥ कुल करनी की आस ॥ भक्त नाम मा-
ला अगर ॥ उर बसो नरायनदास ॥ सर्वसाषी ॥ २३॥ कवित्त ॥ १९८३॥
॥ श्री भक्तमाल मूल संपूर्णम् ॥ टीका कर्त्ता को इष्ट गुरुदेव वर्णनं
॥ कवित्त ॥ रसकाई कविताई जा दिदीनी तिन पाई भई हिये नव सरसाई
नवसी नव चाइ है ॥ उर रंग भवन में राधिका रवन बसै लसैं ज्यों मुकुर मध्य
प्रतिबिंब नाइ है ॥ रसिक समाज में विराज रसराज कहै चहै कृष्ण:
मुष सब फूलै रूप समुदाइ है ॥ जन मन हरिलाल मनोहर ना- रि १९८
व पायो उनि हूं कौ मन हरि लीनौं ता तैं रीझि है ॥ २४॥ इन ही के ९६

दासदासषिग्रियादासजानौंतिनलैबषांन्यैंमानौंटीकासुषदाइहै
गोवर्द्धननाथजूकेसाथमनपर्योजाकोकस्योवासवृंदावनली
लामैंतिगाईहै ॥ मतिअनमानिकछोलछ्योसुषसंतनिकैअंतकौं
नपावैजोइगावैहियेआईहै ॥ घटिबढिजानिअपराधमेरोक्षमा
कीजैसाधगुनग्राहीयहमानिमैंसुनाइहै ॥२५॥ कीनीभक्तमा
लसुरसालनानाभाजूनें ॥ तेरेजीवजालजगजन्मनपोहनी
भक्तिरसबोधनीसोटीकामतिसोधनीहै बाचतकहतअर्थलै
लागैअतिमोहनी ॥ जोपैप्रेमलछनाकीचाहअवगायबाहि
कु न मैंहेतुरदाहनैंननहूंजोहनी ॥ टीका ॥ औरमूलनामनूलजो
तसुनैंजबरसिकअनन्यसुषहोतविश्वमोहनी ॥२६॥ नाना
जूकोअभिलाषछप्पैनलेकियोमैंतौताकीसाषिप्रथमसुनाई

भक्त॰ नीकें गाइकें ॥ भक्त विश्वास जाकें ताही सौं उक्त काम कीजे नीजे रंगम
हियो लीजे संत निलगाइकें ॥ संवत उ सिर्धंद्रा सात नात अन्ह नरफा ८
लगुण मास व दिस समी बताइकें ॥ नारायन दास सकय रास भक्त
माललेकें प्रियादास दास नर बसो रहो छाइकें ॥ २७ ॥ अग्नि ज
रावोलेकें जलमें बुनावो नावे सूरी पें चढावो घोर गरल पिवाइ
वी ॥ वीबूक्राटवावो कोटिमा पलपटावो हाथी आगें मरवावो
एती नीत उपजाइवी ॥ सिंघ पे षवावो चाहो भूमि गाड वावो तीषी
अनी विधवावो मोहि दुष नहीं पाइवी ॥ ब्रजजन प्रानकान्ह वा
तय हकान करौ नक्ति सौं विमुष ताको मुष न दिषाइवी ॥ ६२९ ॥
॥ इति श्री भक्तमाल टीका रसबोधनी संपूर्णं ॥ सं १८६३ मास उत्तम ५८
मासे भाद्रवामासे कृष्णपक्षे पुन्य स्थितौ पर्वगाणां त्रयोदशी वार ६